लौट आओ ना

काव्य संग्रह

मंजू सरावगी

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

लौट आओ ना ..

काव्य संग्रह

मंजू सरावगी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-063-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **मंजू सरावगी**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

LOUT AAO NA BY MANJU SARAVGI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

इंसान का मन इतना चंचल और संवेदनशील होता है वह जानते हुए भी अपने मन में कई उम्मीद के दीप जलाता है। हर मानव जानता की गुजरा हुआ वक्त और जाने वाला इंसान कभी लौट कर नहीं आता है फिर भी मन यह आशा करता है कि जाने वाले एक बार तो लौट आओ, वह माँ हो पिता हो या अपना कोई भी। पर याद तो वह आता ही है साथ में आंखें उसके लौटने का इंतजार करती रहती है। कितना विचित्र मानव मन है व्यक्ति जब तक जीवित रहता है उसकी बातें अहमियत कोई नहीं समझता है पर उसके गुजरते ही वह पल पल दिल में यादों का गुब्बार फैलाता रहता है मन इतना बैचेन हो जाता है कि अभी उससे मिल ले कुछ अपने मन की सुना दे, कुछ उनकी सुन ले। पर यह व्यर्थ की मृगतृष्णा ही रहती है जो भटकाती रहती है मन को।

इसी तरह गुजरा वक्त अपनी याद दिलाता है लौट कर नहीं आता। स्वयं विधाता के वश में भी नहीं होता कि वह समय को रोक सकें, या उसे वापस लाने सकें।

व्यक्ति और वक्त दोनों की तहेदिल से इज्जत करनी चाहिए फिर जीवन में यह अफसोस ही रह जाता है प्रायश्चित करना रह जाता है सदा- सदा के लिए खत्म न होने वाला इंतजार और मन की बेकरारी सिर्फ बेकरारी, मन कहे आ जाओ एक बार

''लौट आओ ना''.....

मैंने प्रथम बार रचना लिखना शुरू किया है १५ नंवबर २०१८ में मेरी माँ इस नश्वर संसार को अलविदा कह गयी थी उनको श्रद्धांजलि देने के लिए एक कविता लिखी थी उसी समय से मैंने लिखना शुरू किया है इसलिए आप सभी का मार्ग दर्शन मिलता रहेगा तो मैं आगे और लिखने का प्रयास करती रहूंगी। आप सभी की बहुमूल्य प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखती हूँ और इंतजार रहेगा आपके विचारों मेरे लिए.....

✍✍मंजू सरावगी

अनुक्रमणिका

1.	बेटी की अभिलाषा	7
2.	गुरू की महिमा	8
3.	स्पंदन	9
4.	कहना सुनना	10
5.	सतत - लगातार - अनवरत	11
6.	हेरा-फेरी	12
7.	वेदना	13
8.	उजियारा	14
9.	नमन शहीदों को	15
10.	दुश्मन	16
11.	ऋंतुराज बंसत	17
12.	नजरिया	18
13.	नफरत	19
14.	संगीत	20
15.	कला कौशल	21
16.	कही और जाओ विषधर	22
17.	किताब	23
18.	आजादी का तिरंगा	24
19.	जल संरक्षण, जीवन संरक्षण	25
20.	शराब	26

21.	अलग- अलग	27
22.	उम्मीद	28
23.	दीप और सूरज	29
24.	अर्धांगिनी	30
25.	लौट आओ ना	31-32

अभिलाषा एक बेटी की

जन्म देकर हमकों,
यह सुंदर संसार दिया
नाम 'मंजू' रखकर
जीवन को पहचान दिया
तुम्हारी बताई राहों पर,
अब हमकों चलना हैं
तुम्हारी यादों को दीया बनाकर,
अब राहों में उजाला करना हैं।
कर्म हमारे हो ऐसे
जिससे तुम्हारा मान बढ़े
तुम्हारी बेटी होने गौरव,
हमको यह सम्मान मिले।
मेरी अर्ज हैं इतनी मां
मेरी ऋद्धा सुमन स्वीकार करना
देकर अपना शुभ आशीष
अपने बच्चों पर कृपा करना
फिर मुलाकात हो इस जीवन मे
मन में यह आस रहे
भूल ना पायेगे तुमको मां
जब तक तन मे सांस रहे
अमूल्य निधि बन गयीं जीवन की
तुम्हारे साथ बिताए सुनहरे पल
जागी आँखों के सपने बनकर
रह गये तुम्हारे सुनहरे पल
करती हूं पल पल अभिलाषा
हर जीवन मे तुम्हारा साथ मिले
मां बेटी का यह सुंदर रिश्ता
हर पल हर जीवन मे याद रहे...

गुरु की महिमा

गिली मिट्टी को देकर आकार
जीवन से हरते जो अंधकार
बिखरे हुए जीवन को संवार
खुशहाली से भरदे ये संसार
प्रथम गुरु हमारी मां को प्रणाम

जीवन को एक नाम दिया
दुनिया में एक पहचान दिया
संबल करके पूरे सपने हमारे
श्रम जल निशदिन बहा दिया
द्वितीय गुरु पिता को प्रणाम

जिसने अक्षर ज्ञान दिया
जिंदगी को रोशन किया
मोमबत्ती सा स्वयं जलकर
राहों में उजाला भर दिया
तृतीय शिक्षक गुरु को प्रणाम

भाई बहन घर परिवार
रिश्ते नाते सखा हमारे
सुख दुःख में सम्मिलित
त्याग और प्यार सिखाते
ये जीवन के गुरु को प्रणाम

जीवन साथी मेरे हमसफर
साथ चलते जीवन में डगर
समर्पण और निश्चल प्यार
इनसे मिली हर खुशी अपार
महागुरू को प्रणाम है प्रणाम

गुरु के होते हैं अनेक रुप
पूज्यनीय है हर स्वरूप
सब गुरु को कोटि प्रणाम
कोटि कोटि प्रणाम है प्रणाम

स्पंदन

एक बार भी नही भूली
कैसे भूल सकती हूँ
वो पल, वो क्षण
हर पल ध्यान रहता है
जब तुमने मेरे तन में
मेरी कोख में
'स्पंदन किया'
वो लप-धक
का होना, पहली बार
विस्मित कर गया क्षण भर
मैं सिहर सिहर गयी
कुछ घबराई
अनहोनी सोच हड़बड़ाई
सासू माँ के पास
दौड़ लगाई
जब समझ आया
कौतूहल से तन मन
रोमांचित हो गया
तन कंपित हो गया
मन मयूरा नाच उठा
ममत्व की भावना
मन में हिलोर लेने लगी
आज भी वो क्षण
वो दिन में मुझे याद रहता है
मेरे लाड़ले तेरे स्पंदन ने
मुझे धरती से आसमां पर
बिठा दिया
माँ होने के रोमांच से
जिंदगी में उल्लास छा गया
नारी के सर्वोच्च पद पर मुझे
विभूषित करा दिया
कही भी रहते वो मेरे
जिगर के टुकड़े
तेरे नाम से ही
मै वो लम्हा, वो स्पंदन में
महसूस करने लगती.....
एक बार भी नहीं भूल पाती

कहना सुना

घिर घिर काले बादल
झूमते आये मेरे आंगन
सर सर करती ठड़ी ठड़ी
पुरवईया लग रही मन भावन
होले होले गुनगुना रही
धीरे धीरे कानों में सरगम सुना रही
काली घटाओं को मैंने टोका
हाथ से थाम के रोका
कुछ देर मेरे पास ठहरो जरा
तुमसे 'कुछ कहना सुनना' है जरा
कुछ अल्फाज तुम कहो
मेरे मन के जज्बात सुनो
तुम्हे देख कर मन खुश हो जाता है
पुरानी यादें दिला जाता है
कभी बगीचे मे घूमते रहना
मन मीत से कहना सुनना
मेरे प्यार की साक्षी तुम
इशारों में कहना सुनना
खमोश लबों की बातें पढ़ना
कभी कभी ..
तुम इतना दूर ले जाती
पचपन में भी तुम
बचपन की याद दिलाती
बचपन में तुम जब
कहती थी कानों में झूमकर
मै आ गयी बन के
वारिश की रिमझिम फुहार
फिर सारी सहेलियों के साथ
भीग के मस्ती होती अपार
कहने सुनने का मजा
खिलखिलाती हंसी खुशी से
हो जाता सरोबार
ये... काली घटा
ओ... रिमझिम फुहार
वो... मेरा कहना सुनना
मेरी... सखियों को
फिर से जा याद करा दो...
मेरी सखियों तक
मेरा पैगाम पहुँचा दो...
वो बेबाक बेबात पर
हंसना इठलाना
बहुत याद आता है
कहना सुनना...

सतत्/लगातार/अनवरत

सतत्

सतत् चलता समय
ये सबको सिखलाता है
कभी न मैं रुकता हूँ
समय का पहिया हूँ
घूमता रहता हूँ
मानव तुम अपना
समय न गंवाओ
चलना ही जीवन है
रुकना तेरी हार है

लगातार

चांद सूरज लगातार
अपना अपना काम करते
समय पर आते समय पर जाते
सूरज अपनी रोशनी देकर
सबके सपने साकार करने
अवसर देता काम करो
आराम नहीं संदेश देता
चांद अपनी चांदनी से शीतलता
देकर आराम से रहने का
पैगाम देता
चैन से सोकर नये सपने सजाओ
दुसरा दिन मिलेगा सपने पूरे करने

अनवरत

अनवरत नदियाँ बहती
चलीं जाती अपने गतव्य की ओर
कल कल झरझर का संगीत सुनाती
अपने अपने रास्ते में
हर बाधा दूर कर के
अपना रास्ता खुद बनाती
सबको खुशहाली
धरती माँ को हरियाली
प्रदान करती जीवन दायनी नदियाँ
सागर की बाहों में सामने
कभी पलट कर नहीं आती
मनुष्य को अनवरत बढ़ने
का संदेश देती
प्रकृति के उपकार और उपहार
दोनों ही मानव को
अपने यथोचित साधन से
सभी कुछ देती है
पर मानव स्वभाव को
शायद विधाता भी
समझ नहीं पा रहा है
मनुष्य उन्नति कर रहा है
या अपने लिए समस्या
स्वयं पैदा कर रहा है।

पर ये हेराफेरी है

चुनाव के पहले नेता जी कहते
हम है जनता के नौकर
पर सत्ता आते ही बदल जाते
नेता जी की कूट नीति को
जनता की समझ न पाये
पर ये कुर्सी की हेराफेरी है
गरीबों को मिलता राशन
नेता जी देते खूब भाषण
मध्यम वर्ग की जनता
का होता है खूब शोषण
मिली भगत के शासन में
लोक तंत्र की हेराफेरी है
नये नये सपने दिखाते
नये नये जाल है बुनते
लालच में आकर सब
अपनी मेहनत का रूपया लुटाते
भोली जनता फिर मूर्ख बनती
पर ये चिटफंड की हेराफेरी है
आशा राम या राम रहीम
सब है एक समान
बहकावे में आकर मानव
मानते इनको महान
राधे मां के रूप में हो रही
अनाचार की हेराफेरी है
ईश्वर के नाम पर नित्य
आंडबर खूब होता है
पाप पुण्य के पाखंड में
चढ़ावा खूब चढ़ता है
आस्था और विश्वास में
ये धर्म की हेराफेरी है
अनाथालय और आश्रम बनते
एन जीओ करते खूब निर्माण
नारी निकेतन, छात्रा वास मे
नित्य होतें अनैतिक काम
सबके रहमोकर्म पर चलता
ये दान धर्म की हेराफेरी है
न दहेज लेगे, न दहेज देगें
होता खूब प्रचार प्रसार
रीति रिवाज के रूप में
सौगातें बांटते बेशुमार
आदान प्रदान के नाम पर
ये सभ्य समाज की हेराफेरी है
हेराफेरी समझ जाओ तो दुनिया जेब में
वरना फंस जाओगे दुनिया के फरेब में

वेदना/पीर

प्रसव वेदना भी भूल जाती
माँ जब बनती है नारी
उस पल को कभी नही भूलती
संतान करती है गद्दारी

माँ की ममता का भी मोल लगता है
जिंदा में उसको अंनत दुख मिलता है
औलाद की खुशी को हर कष्ट सह लेती
बच्चों की बेरूखी जिंदा ही जला देती

माता पिता उनके लिए बोझ बन जाते
घर में स्थान नहीं, वृद्धाश्रम छोड़ आते
मंदिर मंदिर जाकर दुआ मांगते फिर
हाथ जोड़ भंडारा और लंगर करते हैं

दानवीर का नाम कमाते धर्मशाला बनाते
माता पिता की जमा पूंजी पर अपना हक जमाते
कम पढ़े लिखे माँ बाप उनको गंवार नजर आते
अपनी पढ़ाई लिखाई के गुरुर में अच्छा बुरा भूल जाते

नयी पीढ़ी में सबका यही हाल है
कोई कम तो किसी का बुरा हाल है
इसलिए सबको सबक समझना है
अपने कर्तव्य के साथ हक भी समझना है

उजियारा

साक्षरता का दिया जलाना है
सबको शिक्षा दिलाना है
जब तक न होगा अक्षरों का ज्ञान
न आयेगा तब तक नया बिहान
जनता जब तक न होगी शिक्षित
देश न होगा हमारा विकसित
शिक्षा का फैलेगा उजियारा
दूर हो गहन अज्ञान का अंधियारा
कूरीतिया और बुराइयाँ
ढ़क देतीं सारी अच्छाइयां
साक्षरता का करो प्रसार
शिक्षा को बनाओ जीत का हथियार
बेटी पराई और बेटा चिराग
इन बातों का करो प्रतिकार
भ्रूण हत्या का करें बहिष्कार
छूआछूत जात पात का करें तिरस्कार
चलाये एक नया अभियान
लड़की लड़का एक समान
बेटी जो गर्भ में मारी जायेगी
बहू नही फिर आंगन आयेगी
सब मिलकर एक दीप जलाये
आशा और विश्वास की ज्योत फैलाये
चहुँ और फैले शिक्षा का उजियारा
शिक्षित हो प्यारा भारत हमारा

मेरा नमन शहीदो को

उम्र बड़ी नहीं थी
काम बड़ा कर गया
जिदंगी छण भंगुर थी
पर नाम अमर कर गए

माँ से ज्यादा भारत माँ से था प्यार
भारत माँ की चिंता रहती थी अपार
वतन के लिए किया तन मन निछावर
फांसी का फंदा बन गया फूलों का हार

देश प्रेम का जज्बा दुनिया को दिखलाया
अपने मृत्यु से सारे जहाँ का शीश झुकाया
स्वतंत्रता अग्रदूत बन सबको राह दिखाई
सारी जन के मन में देश प्रेम की ज्योत जलाई
नत मस्तक है तुम्हारी शहीदी पर
आंसू पूण श्रध्दांजलि है शहीदी पर
जब तक सूरज चमके गगन में
जब तक चांद चमके अगन में

राज गुरु, भगत सिंह, सुखदेव जहां में
अमर है अमर रहेगे सारे आसमां में

सीखा गये ये जहां को
कर्म और फर्ज कैसे करते हैं
देश के बच्चे जब देश पर
अपना निज बलिदान करते है

वह देश की पवित्र मिट्टी को
देवता भी नमन करते हैं
बागों के हर फूल भी इनके
चरणो में चढ़ने का अरमान रखते हैं

दुश्मन

दुश्मनी भी न चाहते थे जिससे,
वो बन गये हमारे हमदर्द,
सोचा न था ..
छा गई थी वीरानी, पतझड़ के बाद
वो बन के आयेंगे जीवन में बंसत
सोचा न था ..
मीलों का सफर, चलते तपते
रेगिस्तां मे
सावन की बदली बन छा जायेंगे
सोचा न था ..
चल पड़े थे भटकते अंधेरी राहो मे
वो बन के चिराग, जल जायेंगे राहो
मे
सोचा न था ..
प्यासे तरसते थे एक बूंद के लिए
झरना, अमृत का बन जायेंगे
सोचा न था ..
घिर गये थे गमो की मनहूसियत मे
वो खुशियों की महफिल सजा देगें
सोचा न था ..
थी, तमन्ना की कदम दो कदम
साथ मिल जाये
जीवन भर के लिये, हम सफर बन
जायेंगे
सोचा न था ..
यूं तो जलाये थे आस के दीप हमने
दमकता सूरज मिल जायेगा हमें
सोचा न था ..
काँटे ही काँटे, नजर आये राह
डगर मे
महकते फूल बिछा दोगें राहो सफर
मे
सोचा न था ..
सितारे की तमन्ना की थी हमने
चाँद बाँहो मे ही सिमट आयेगा
सोचा न था ..
दुश्मन ही दुश्मन नजर आते थे
शहरा मे
बारात मिल जायेगी दोस्तों की
सोचा न था ..
पल भर की खुशियां माँगती 'मंजू'
दामन ही खुशियों से भर जायेगा
सोचा न था ..

ऋतुराज

पावस ऋतुराज पधारे
महक उठे घर आँगन सारे
नैना उदास, ताकतें द्वारे
आओ, प्रियतम पास हमारे

अमराई ने ली अंगराई
बागों मे आम बौराई
कोयल फिरे डालो डालो
भंवरा घूमें बागो बागों

भंवरो की गुन गुन
लगे है सुहानी
फूलों फूलों डोले
तितली रानी

ठंडी ठंडी चले पुरवाई
सुहानी बंसत ऋतु आई
टेसू ने भी आवाज लगाई
मैं भी खिल गया भाई

खेतों मे सरसों फूली
धरा ने ओढी चूनर पीली
रंग बिरंगी बगियाँ प्यारी
फूलों से लद गयीं सारी

आया माघ मधुमास
चंहु ओर खिले पलाश
महुआ की भीनी खुशबू
तन मन मे भरे मिठास

राधा जी की सुनकर
झनझन पायलिया
कान्हा ने भी छेड़ी
अपनी मुरलिया

राधा कृष्ण की रास सुहानी
सब को कर गई दिवानी
धरती अंबर पर फिर छाई बहार
सब मनाये बंसत त्योहार
बंसत त्योहार, प्यारा बंसत त्योहार

नजरिया

गिलास किसी को,
आधा भरा नजर आता हैं
गिलास किसी को,
आधा खाली नजर आता हैं
अपना अपना देखने का
नजरिया हैं
किसी को आधा गिलास ही
मन को तृप्त कर जाता हैं
किसी के दिष्टि कोण मे
आधा सिर्फ कमी दिखाता हैं

नजरिया
खेलने का भी अलग होता हैं
कोई जीत कर भी मन को
सूकून नहीं दे पाता है
किसी को हारने भी
जीत की कामयाबी का
जूनून नजर आता हैं

जो नहीं मिला वो एक ख्वाब हैं
जो मिल गया वो लाजवाब हैं
जीवन का यही उसूल है
जो समझ गया वह मशगूल हैं
जो न समझे वह मजबूर हैं
जिस ने अपना लिया वह मशहूर हैं
अपना अपना द्विष्टीकोण हैं

सारे सुख दुःख तो
मन के झमेले हैं
वरना, भरी महफिल मे
हम अकेले हैं

जीवन को दो अभय दान.....
जिदंगी को बनाये सुखों की खान..
.....
बदलना हैं दुनिया को
बदलना होगा जरिया.....
बदलेंगे हम
बदलेगा नजरिया.....

नफरत

गृहलक्ष्मी का नाम दिया
दिया, न, लक्ष्मी का सम्मान
अपने सपने की आहुति देकर जिसने
किया निज अरमानों का बलिदान

निज मतलब मे जला दिया
नारी के अधिकार को
बेबस अबला बना दिया उस
नाम देकर उसके संस्कार को

नफरत हैं, दुनिया की रिवाज से
जिसनें ससुराल का नाम दिया
अरमानों से, ।।बहु।। लाकर, जिसे
दहेज, चिता पर जला दिया

नफरत हैं मुझे उस नारी रूप से
जिसने ।।सासू मां।। का आकार लिया
पराई बेटी, को घर लाकर
जिस पर अत्याचार किया

नफरत हैं उस पुरुष समाज से
जिसने नारी को मान कर,अबला
बहु, बेटी, पत्नी मां बना कर
प्यार, विश्वास से उसके मन छला

संगीत

रात रानी ने चांद के साथ मिल
समेट ली अपनी तारों की बारात
सूरज सात घोड़ो पर हो सवार
अपनी सुनहरी रश्मियों के साथ
बिखेरने लगे सिंदूरी आभा धरा पे
जल थल नभ में नाचने लगी साथ

भोर की सुबह ने ली अगंराई
पक्षी ने कलरव का छेड़ा संगीत
फुदक फुदक कर गौरैया रानी
वन उपवन चिड़िया लगी चहकाने
कोयल रानी अमरईया में गाये
सुंदर सुंदर मधुर संगीत सुनाये

पहाड़ से बह रहे निर्मल झरने
ऊपर से नीचे आती लहराके लहरें
कल कल झर झर संगीत सुनाती
सबे ,तन तन को पावन कर जाती
पिया मिलन को इठलाती बलखाती
सागर की ओर दौडती चली जाती

पेड़ पौधों झूम झूम लहराते
हवाओं के संग संग गीत गाते
मंद मंद महकती चली हवायें
सबको सुबह प्यार से उठाये
पशु पक्षी सब वन भटकने
चले सब अपने अपने पेट भरने

बागों में खिल खिलाती कलियाँ
रंग बिरंगी सुंदर सुंदर तितलियाँ
फूल फूल पर उड़ उड़ कर
मंडराती
फूलों के कानो में कोई संगीत
सुनाती
भंवरों की गुन गुन लगती सुहानी
भंवरों को देख मुस्कुराती कलियाँ
रानी

कला- कौशल

कला कौशल रण में दिखाती थी
अंग्रेजो के वो छक्के छुड़ाती थी
रानी की तलवार ऐसे चलती थी
जैसे बादलों में बिजली कड़कती थी
जब जब तलवार लहराती हाथ में
दुश्मन का सिर कटता था साथ में
अंग्रेजों से रानी लक्ष्मीबाई की लड़ाई थी
आजादी के लिए आजादी की ज्वाला बन आई थी
तात्या की बहन छबीली थी
आजादी उनकी सहेली थी
अस्त्र शस्त्र से वह खेला करती
भारत की नारी वो अलबेली थी
अपने कला कौशल से नारी सेना बनाई
घुड़सवारी, तलवार बाजी भी सिखाई
आजादी के लिए अपनी जान गंवाई
स्वतंत्रता सेनानी बन आजादी मशाल जलाई
उम्र बस तेईस की थी
पर दुनिया को दिखा गयी
जिंदगी को अमर बनाने का
जीवन की कला सिखा गयी
शहीदों की शहादत में
सर्वप्रथम तुमको याद करते हैं
रानी लक्ष्मीबाई हम भारतीय
दिल से तुमको नमन करते हैं

कही और जाओ विषधर

केसर क्यारी के विषधर
अब कही और जाओ
केसर को अब महकने दो
अपने से उसे संभलने दो

धारा ३७०भुजंग बन लिपटी रही
हर समय सबको यह डसती रही
मंजे सपेरे ने पकड़ा है तुझको
जितना चाहे तू फुंफकार ले अब
सारा जहर अब बाहर आयेगा

आंतकवाद का विनाश होगा
गद्दारों को न बक्शा जायेगा
धरती का स्वर्ग था काश्मीर
फिर से स्वर्ग बनाया जायेगा

काश्मीर मेभीअब तिरंगा लहरायेगा
वंदे मातरम वहाँ भी गाया जायेगा
एक संविधान एक सी कानून धारा
अब सम्पूर्ण होगाभारत देश हमारा

किताब

खुली किताबों में सब मिल जाता है
खुली किताब तो जीवन दर्पण होती है
हर की जीवनी इसमें छिपी होती है
ये किताब जिंदगी संवार देती है
ये किताबें तन्हाई में अपनो की याद कराती हैं
यादों को अपने में समेट कर रखती है
कभी खुशियों की तितलियों बन उड़ जाती है
कभी पौधों की महक हर तरफ फैलाती है
हर सुख दुख का इलाज है इसमें
वेद पुराणों का ज्ञान भंडार इसमें
आयुर्वेद का संसार बसता है इसमें
जीवन जीने की कलायें है इसमें
हमारी संस्कृति का संग्रह समाहित हैं
भारत की गौरवगाथा की कहानी है
परियो की सुंदर कहानी है किताब
जीवन दर्शन भरी होती है ये किताब
हमारी सच्चा मित्र होती है किताब
पढ़ लिख कर बनते हैं अच्छे इंसान
अक्षर अक्षर मिल शब्द बन जाते हैं
शब्दों से महा ग्रंथ फिर बन जाते हैं
कभी रामायण बन त्याग और रिश्ते सीखाती
कभी महाभारत की शिक्षा दे जाती है सबको
गीता बन धर्म कर्म का ज्ञान दे जाती है
भूगोल खगोल भी नजर आती है सबको

आजादी का तिरंगा

हमारी आजादी का ये तिरंगा
लहर लहर लहराता है
अपने तीनों रंगों की विशेषता
यह सबको सुनाता है
केसरिया रंग देता है ज्ञान
देश के खातिर करो निज बलिदान
तन मन धन सब समर्पण करो
देश की आजादी पर अर्पण करो
सफेद रंग बताये सरलता सादगी
सुख अमन चौन,हो देश की
आजादी
निश्चल मन से सब कर्म करो
स्वच्छ निर्मल तुम विचार धरो
हरा रंग बताता खुशहाली
धरा में रखो हरदम हरियाली
मिल जुलकर खूब पेड़ लगाओ
अपने देश को हरा भरा बनाओ
नीला चक्र देता हमें ज्ञान
सदा रखो प्रगति पर ध्यान
निरंतर कार्य शील बनो

देश का तुम विकास करो

चक्र न कभी रुकता है
हरदम वक्त पर चलता है
यह सब ज्ञान देता है तिरंगा
लहर लहर लहराता है तिरंगा

हमारी आजादी का तिरंगा
इसकी शान बढ़ायेगे हम
जो वतन पर शहीद हुए हैं
उन पर श्रृद्धा सुमन चढ़ायेगे

जो देश पर होते हैं कुरबान
उनका तन तिरंगा सजाता है
किस्मत वाले होते हैं वह जो
इस तिरंगे का सम्मान पाते हैं

एक बने हम, नेक बने हम
देश को सद्मार्ग पर ले जायेंगे
प्रतिभाओं का हम सम्मान करें
इस देश को महान् भारत बनायेंगे

जल संरक्षण, जीवन रक्षण

बूंद बूंद जल बचाना है
सब की प्यास बुझाना है
मानव ने की मन मानी
अब पछता रहै है प्राणी

अंधाधुंध पेड़ काटकर डाले
भूमि का किया खूब क्षरण
धरा सारी सूख गयी अब
कैसे हो सबका भरण पोषण

जल बिना सब अधूरा
नहीं उपजेगा खेतों में अन्न
सूरज का तपन बढता जाये
धरती हो रही सूखी जर्जर

न बादल बनते, न जल बरसा
सावन भादों सूखा जाये
धरती दरक रही है देखो
सब प्राणी को प्यास सताये

जितना अधिक से अधिक
होगा जल का संरक्षण
मानव का जीवन भी
होगा उतना ही रक्षण

बूंद बूंद जल संग्रह करना है
पानी को बर्बाद नहीं करना है
आने वाली पीढ़ी को मिलेगा जल
जब जल संरक्षण, जीवन रक्षक
हम मन में यह बात करें मनन
सबसे है हमारी अनुनय विनय

सब मिलकर ले नियम
हरी भरी धरा रखेंगे हम
खूब धरती पर पेड लगायेंगे
अपने जीवन को खुशहाल बनायेंगे

शराब

शराब इंसान नहीं पीता
इंसान को शराब पी जाती है

कुछ पलों के सकून के लिए
बरबादी के सागर में डूबा जाती है
मेहनत का धन शराब में
घुल मिल जाता है
बच्चों के मुंह का निवाला
नशा निगल जाता है
स्कूल की फीस भी कभी-कभी
शराब खाने में खर्च हो जाती है
शराब इंसान नहीं पीता
इंसान को शराब पी जाती है

सांप तो एक इंसान को डसता
शराब मेरे परिवार को डसती है
जहरीली शराब होती है मगर
जहर का परिवार पर असर होता है
बदन की बरबादी पर कभी-कभी
सांसें भी इंसान से रूठ जाती है
शराब इंसान नहीं पीता है।
इंसान को शराब पी जाती है

माता पिता, बहन भाई, पत्नी बच्चे,
रिश्ता भले कमजोर हो जाता है
बदनामी, संस्कारहीनता का रिश्ता
बहुत ही मजबूत हो जाता है
एक बदन डग ममता है लेकिन
कई जिंदगियां डगमगा जाती है
शराब इंसान नहीं पीता
इंसान को शराब पी जाती है

मिल कर संकल्प लें हम
शराब को हाथ न लागायेंगे
नशा मुक्ति का अभियान
हम सब मिलकर चलायेंगे
शराब देश समाज और परिवार का
विकास अवरुद्ध कर जाती है
शराब इंसान नहीं पीता
इंसान को शराब पी जाती है

शराब बरबादी सिर्फ बरबादी है
धन की,तन की परिवार की खराबी है

अलग अलग

प्रकृति का है सबको उपहार
सबको बनाया विभिन्न प्रकार
अलग अलग सबका रंग रूप
सबके अलग अलग विचार

इंसान जानवर और पशु पक्षी
जुदा जुदा है सबकी आकृति
खान पान स्वभाव आहार
अद्‌भुत सबके आकार प्रकार

अलग अलग सब पेड़ पौधे
अलग अलग सब्जी तरकारी
अलग अलग है फल और फूल
अलग अलग है स्वाद रंग रूप

धरा के भी अलग स्वरूप
कही नदियाँ झरने पहाड़
कही खाईं दलदल धरातल
कहीं समतल मरू मैदान

हर एक का अपना महत्व
सबका अपना अपना स्थान
कही विचित्रता, कही आश्चर्य
सबके सब है दिलचस्प

प्राकृतिक का रंग रुप जुदा न होता
सोचो दुनिया का फिर क्या होता
कैसे होती सबकी पहचान
हे ईश्वर तुमको प्रणाम तुम को
प्रणाम

उम्मीद

उम्मीद का दीप जला के रखना
ज्योंत से ज्योंत जला के रखना

बड़ी ही कठिन है
ये जीवन की डगर
कभी नीची खाईं तो
हो कभी ऊंचा शिखर

हाथों में हाथ थाम के चलना
उम्मीद का दीप जला के रखना

बहुत अनजान है ये
जिंदगी का सफर
कभी छोटी होती है
कभी लम्बी मिले उमर

रिश्तों को दिल से निभा के चलना
उम्मीद का दीप जला के
रखना

सुख के उजालों में
सब आते हैं नजर
दुख के अंधेरे में
सब हो जाते ओझल

हौसले की मशाल जला के रखना
उम्मीद का दीप जला के रखना

कब थम जाये ये
सांसो का सफर
कब बिछड़ जाये
राह में हम सफर

तन्हाई में यादों का दीप जला के
रखना
हर पलउम्मीद का दीप जला के
रखना

बड़े नाजुक होते हैं
रिश्तों के धागे
एक छोर संभालो
तो दूसरा छोर भागे

प्यार की डोर सुलझा के रखना
उम्मीद का दीप जला के रखना

दीप और सूरज

टिम टिमता छोटा-सा दीया
फैला रहा था रोशनी
दूर कर रहा था अंधियारा
तभी सुबह की लाली आई
संग सूरज की रश्मि लाई
दिया ने 'सूरज' से कहा भाई
मेरी बुझने की बारी आई
दीया ने कहा मै शांत होता हूं
चुपचाप मै जलता हूं
सुनो सूरज, मेरी शिकायत
सबको रहता तुम्हारा इंतजार
सब करते तुम से प्यार
सब करते तुमको प्रणाम
सब करते तुम्हारा अभिनंदन
सूरज को समझ में आया
दीपक को है मेरे से गिला
वह मन ही मन मुस्कुराया
दीया को थपथपा
प्यार से गले लगाया
और समझा कर बोला
मैं तो समय के साथ आता हूं
और समय के साथ चला जाता हूं
मैं तो समय के साथ बंधा हूं
जब मैं अपनी किरणें समेट लेता
जब फैला देता हूँ अंधियारा
तब तुम ही उनके सूरज बनते
उजियारा चहुँ ओर फैलाते हो
उनके साथ साथ चलते हो
बनते हो उनके रोशनी
तुम तो सबके आस के दीप
तुम तो सबके मन के मीत
सब तो तुमसे ज्योत जलाते
कभी किसी ने मन का सूरज
जलाया
सभी मन का दीप जलाते
सब के हृदय में विश्वास जगाते
हम तुम का एक ही गुण है
दोनों को ही दुनिया रोशन करना
दोनों से ही जग का उजियारा
आपस के है हम दोनों साथी
रात को तुम सब का साथ निभाते
दिन भर में सबको दौड़ता
दीये को बात समझ में आई
अपनी गलती की माफी पाई
शुरू की फिर दोनों ने देना
उजियारा।

अर्धांगिनी

सात फेरो, सात वचन लेकर
साजन, मैं तेरी अर्धांगिनी बन आ गई
हाथों में मेंहदी, मांग में सिंदूर
पैरों में महावर तेरे नाम की सजा गई
छोड़ बाबूल का अंगना, सजन
मैं तेरे संग संग ससुराल आ गई
हर कदम तुम्हारे साथ चलूंगी
सुख दुख मे तुम्हारे साथ रहूंगी
साजन तुम्हारा कुछ नहीं अब
हमारा सब कहने मैं आ गई
साजन, मैं अर्धांगिनी बन आ गई
धर्म कर्म सब साथ करेंगे
सुखी परिवार हम बनायेंगे
मेरे बिना तुम्हारा हर काम अधूरा
दीया और बाती सा रिश्ता हमारा
तुम चांद मेरे मैं तेरी चांदनी बन आ गई
साजन, मैं तेरी अर्धांगिनी बन आ गई
तुम्हारे सब रिश्ते मैं निभाऊंगी
तुम्हारे जीवन में खुशियाँ लुटाऊंगी
घर परिवार को फुलवारी बनाऊंगी
तन मन अर्पण कर जिदंगी सजाऊंगी
तुम संगीत मैं सरगम बन आ गई
साजन मैं तेरी अर्धांगिनी बन आ गई

लौट आओ ना

कभी काँटा भी न चुभ पाया
हमारे पाँव में,
जब तक रहे मां तुम्हारे
ममता की छाँव में
खमोश रहती थी तुम पर
हंसतीं थी घर की दीवारें
खिल खिलाती थी छत की मीनारें
घर रहता था गुल गलजार
छायी रहती थीं खुशियों की बहार
तुम गई जब से मां
सूना हैं मन का आँगन
खमोश हैं घर का हर कोना
रोता हैं कमरा तुम्हारा
सिसकता हैं तकिया बिछोना
हर समान है अपनी जगह पर
पर पूरा घर है खाली
सूनी सूनी बगिया का
भटकता सा माली
भइया ने कर दिया मुक्त,
देकर, तुमको पिण्डदान
आंसु भरी हम लोगों कि,

आँखें, नहीं ले विराम
भइया, भाभी, भतीजे करते
हम लोगों से बहुत प्यार
तुमसे भी ज्यादा रहता
हैं उनको हमारा इतंजार
भइया को कह नही पाऊंगी
भइया को समझा नही पाऊंगी
मन का वह खाली कोना
उनको दिखा नही पाऊंगी
आखिर उनका भी तो सूना हुआ
हैं ममता का आंचल
उनकी आँखें भी तो नम है
तैरता हैं उनमें अंसु जल
जिस द्वार से तुम गयी मां
उस पर निगाहें ठहरी हुई हैं
लौट कर आओगी फिर
जैसे वो कह रही हैं
तुम्हारी ममता का हैं
इतंजार.....
लौट कर आओ ना
मां इक बार
बस इक बार.....।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **मंजू सरावगी**

पति - श्री राजेन्द्र सरावगी

उपनाम - मंजरी

शिक्षा - बी.ए.

पता - मंजू सरावगी, श्री राजेन्द्र सरावगी, बी-७, राधा स्वामी नगर
नियर भाटा गाँव चौक, रायपुर छतीसगढ़, रायपुर ४६२००१

मोबाइल - ९७७०२२१८०२, What's app ९४७६२४६६२७

ईमेल - manjusaraogi1002@gmail-com

सक्रियता - सामाजिक संस्थाओ में गतिविधियां और समाज सेवा
अखिल भारतीय साहित्य संस्था की सदस्य
श्री गहोई वैश्य महिला समीति रायपुर की सदस्य
अखिल भारतीय गहोई समाज की सदस्य
इंटरनेशनल लायंस क्लब शिखर रायपुर की सदस्य
वर्तमान में लायंस क्लब की कोषाध्यक्ष
अभिव्यंजना नारी सुवास मंच की सदस्य
छत्तीसगढ़ हाइकु मंच की सदस्य
शिव साहित्य कला उनयन मंच की सदस्य

प्रकाशन - यादें (सांझा संकलन), झंकार (सांझा संकलन), प्रेरणा (सांझा संकलन), कवियित्री विशेषांक सांझा संकलन

सम्मान - महिला शक्ति करण मंच रायपुर सम्मान
लायंस क्लब श्रेष्ठ कोषाध्यक्ष सम्मान
गहोई वैश्य महिला समाज सम्मान

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-063-6
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध